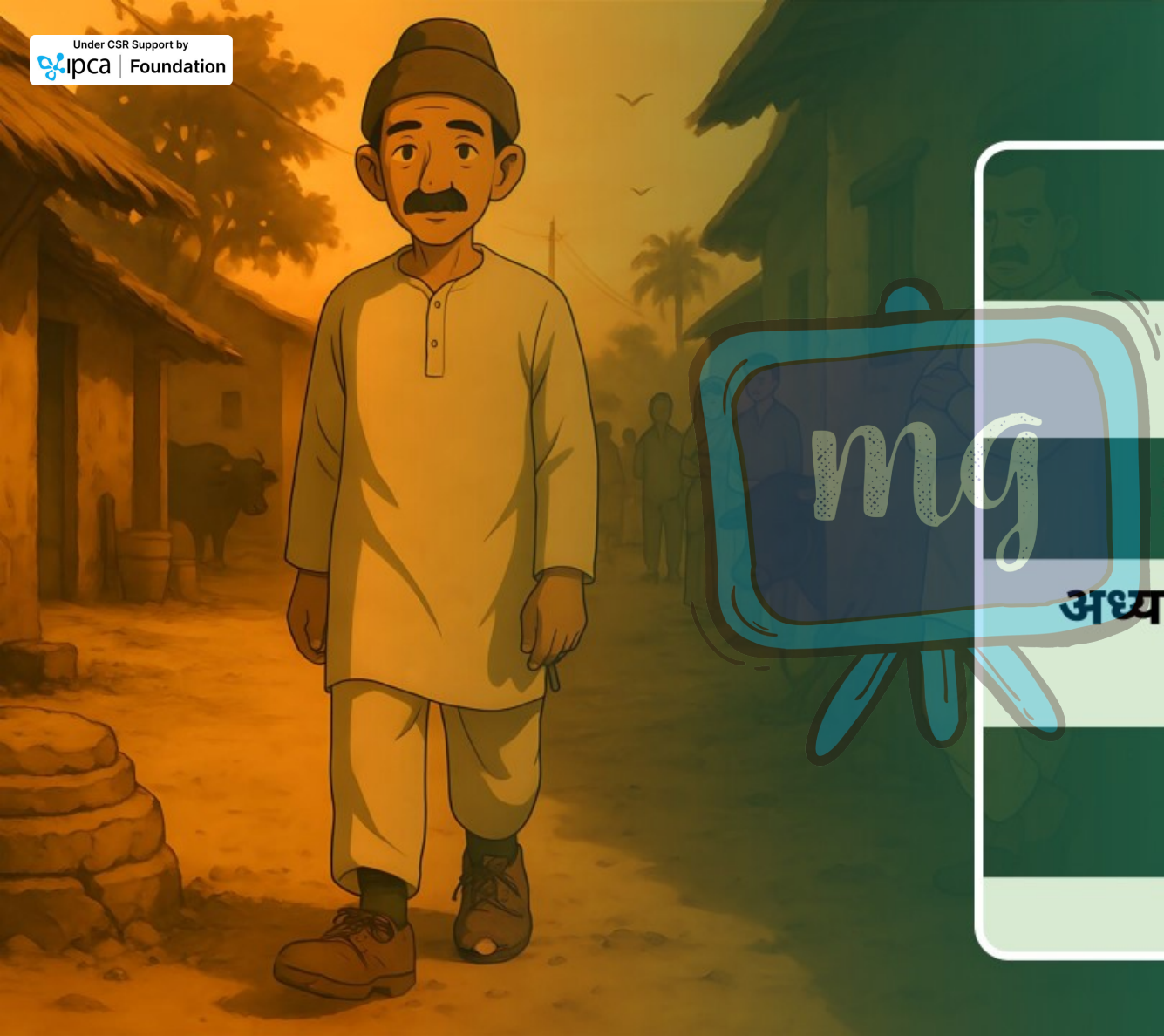
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा – 9

हिन्दी

क्षितिज (गद्य खंड)

अध्याय–5 : प्रेमचंद के फटे जूते (हरिशंकर परसाई)

भाग – 2

कुशाल सोलंकी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. लेखक परिचय
2. प्रेमचंद के फटे जूते

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस ज़माने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



तुम महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट, युग-प्रवर्तक, जाने क्या-क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है ! मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अँगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा जमीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहूलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अँगुली बाहर नहीं दिखेगी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



तुम्हारी अँगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अँगुली ढँकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं! तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहने हो! मैं ऐसे नहीं पहन सकता। फोटो तो जिंदगी भर इस तरह नहीं खिंचाऊँ, चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे। तुम्हारी यह व्यंग्य-मुसकान मेरे हौसले पस्त कर देती है।

ठाठ – शान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



क्या मतलब है इसका? कौन सी मुसकान है यह ?

–क्या होरी का गोदान हो गया?

–क्या पूस की रात में नीलगाय हलकू का खेत चर गई?

–क्या सुजान भगत का लड़का मर गया; क्योंकि डॉक्टर क्लब छोड़कर नहीं आ सकते?

नहीं, मुझे लगता है माधो औरत के कफ़न मुसकान मालूम होती है। के चंदे की शराब पी गया। वही मैं तुम्हारा जूता फिर देखता हूँ। कैसे फट गया यह, मेरी जनता के लेखक? क्या बहुत चक्कर काटते रहे?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जनता के लेखक
सामाजिक नागरिक के संघर्ष

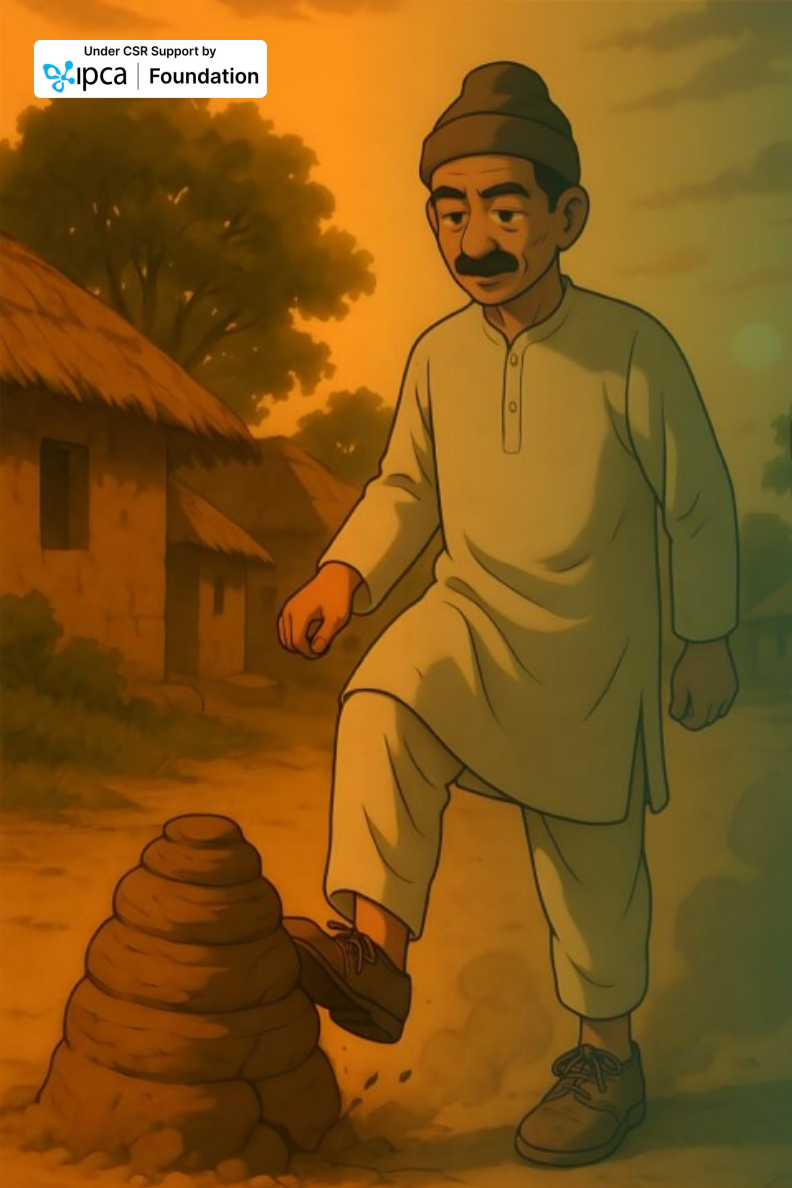
क्या बनिये के तगादे से बचने के लिए मील-दो मील का चक्कर लगाकर घर लौटते रहे?

चक्कर लगाने से जूता फटता नहीं है, घिस जाता है। कुंभनदास का जूता भी फतेहपुर सीकरी जाने-आने में घिस गया था। उसे बड़ा पछतावा हुआ।

तगादा – तकाज़ा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उसने कहा- 'आवत जात पन्हैया घिस गई, बिसर गयो हरि नाम।' और ऐसे बुलाकर देने वालों के लिए कहा था- 'जिनके देखे दुख उपजत है, तिनको करबो परै सलाम!'

चलने से जूता घिसता है, फटता नहीं। तुम्हारा जूता कैसे फट गया?

मुझे लगता है, तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो।

पन्हैया – देशी जूतियाँ
बिसरना – भूल जाना

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कोई चीज़ जो परत-पर-परत सदियों से जम गई है, उसे शायद तुमने ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। कोई टीला जो रास्ते पर खड़ा हो गया था, उस पर तुमने अपना जूता आज़माया। तुम उसे बचाकर, उसके बगल से भी तो निकल सकते थे। टीलों से समझौता भी तो हो जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नियम
व
धर्म
आदर्श

सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं, कोई रास्ता बदलकर, घूमकर भी तो चली जाती है।

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमज़ोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम-धरम' वाली कमज़ोरी? 'नेम-धरम' उसकी भी जंजीर थी। मगर तुम जिस तरह मुसकरा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम-धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

नेम – नियम
धरम – कर्तव्य

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



तुम्हारी यह पाँव की अँगुली मुझे संकेत करती-सी लगती है, जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो? तुम क्या उसकी तरफ़ इशारा कर रहे हो, जिसे ठोकर मारते-मारते तुमने जूता फाड़ लिया? मैं समझता हूँ। तुम्हारा अँगुली का इशारा भी समझता हूँ और यह व्यंग्य-मुसकान भी समझता हूँ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



तुम मुझ पर या हम सभी पर हँस रहे हो, उन पर जो अँगुली छिपाए और तलुआ घिसाए चल रहे हैं, उन पर जो टीले को बरकाकर बाजू से निकल रहे हैं। तुम कह रहे हो-मैंने तो ठोकर मार-मारकर जूता फाड़ लिया, अँगुली बाहर निकल आई, पर पाँव बच रहा और मैं चलता रहा, मगर तुम अँगुली को ढाँकने की चिंता में तलुवे का नाश कर रहे हो।

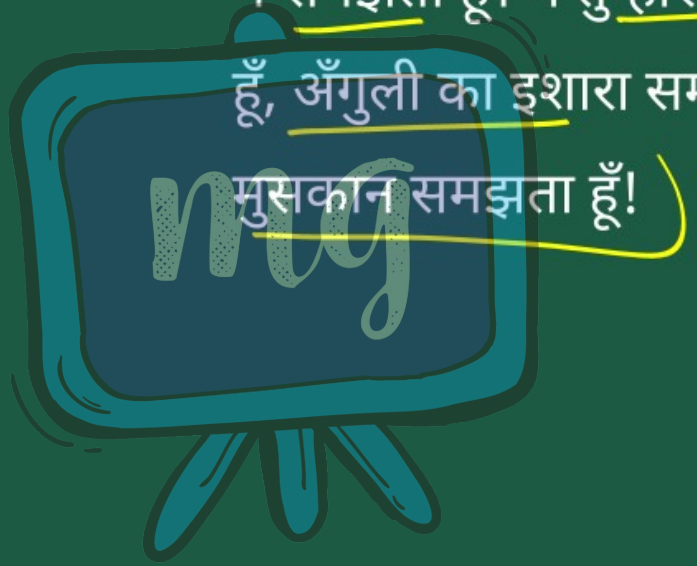
बरकरार – बचाकर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तुम चलोगे कैसे?

मैं समझता हूँ। मैं तुम्हारे फटे जूते की बात समझता हूँ, अँगुली का इशारा समझता हूँ, तुम्हारी व्यंग्य-मुसकान समझता हूँ!





हिन्दी के प्रति समाज में उदासीनता

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1 | ‘हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं’ का आशय स्पष्ट कीजिए।

अ लोग परदे उतार देना चाहते हैं।

ब लोग परदे में ढँककर रहना चाहते हैं।

स लोग ऊपरी दिखावा बनाए रखना चाहते हैं।

द प्रेमचंद दिखावा नहीं करते थे।

मूल्यांकन (Assessment)



2 लेखक प्रेमचंद के फटे जूते से क्यों परेशान हैं?

अ उसे हिंदी लेखकों की दुर्दशा पर दुख है।

ब उसे प्रेमचंद की अयोग्यता पर दुख है।

स उसे जनता के लेखकों की दुर्दशा पर दुख है।

द उसे प्रेमचंद की अकुशलता पर दुख है।

मूल्यांकन (Assessment)



3 परत-पर-परत जमने वाली चीज़ से लेखक क्या कहना चाहता है?

अ धूल की परत

ब मैल की पपड़ी

स रूढ़ियाँ

द लंबे समय से चली आ रही गलत आदतें

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4 रास्ते में खड़े टीले से क्या आशय है–

अ बाधाएँ

ब मार्ग में खड़े कीर्ति-स्तंभ

स महत्वपूर्ण लोग

द समाज को पथभ्रष्ट करने वाली शक्तियाँ

मूल्यांकन (Assessment)



5 बगल से निकलने का क्या आशय है?

अ बच कर निकलना

ब मुसीबतों की अनदेखी करना

स कायरता दिखाना

द कलाबाजियाँ खाना